eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

जातिवाद और अम्बेडकर के विचार

डॉ0 लक्ष्मीना भारती[1] एवं संजना यादव[2]

[1]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, डॉ0 भीम राव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, फतेहपुर।
[2]शोध–छात्रा, राजनीति विज्ञान, डॉ0 भीम राव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, फतेहपुर।

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

भारतीय समाज की संरचना में जातिवाद एक दीर्घकालिक सामाजिक बुराई के रूप में मौजूद रहा है, जिसने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक असमानताओं को जन्म दिया। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जातिवाद के विरुद्ध तीव्र और तर्कपूर्ण विरोध दर्ज कराते हुए सामाजिक न्याय, समानता और मानव अधिकारों की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया। इस शोधपत्र में अंबेडकर के जाति व्यवस्था पर विचार, ब्राह्मणवाद की आलोचना, छुआछूत और दलित अधिकारों से जुड़ी उनकी वैचारिक दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। यह शोध पत्र अंबेडकर के सामाजिक दर्शन को समकालीन संदर्भों में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द :– भारतीय समाज, अनुच्छेद, सामाजिक न्याय, दलित, भारतीय संविधान, समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, जाति व्यवस्था, वर्तमान परिवर्तन, संघर्ष, सामाजिक स्थिति।

Introduction

जातिवाद एक ऐसा शब्द है जो कहीं न कहीं समाज को टुकड़ो में बाँट देता है। जातिवाद ने समाज की प्रगति में बाधा उत्पन्न किया है जो हर जाति व वर्ग के लिए अहितकर है। भले ही उच्च जातियां इसका लाभ उठाती है। परन्तु कहीं न कहीं इसका दुष्प्रभाव सभी को भुगतना पड़ता है। आज २१वी सदीं में भी जातिवाद का प्रकोप कम नहीं है , परिवार से लेकर राजनीति तक जातिवाद देखने को मिल जायेगा

जातिवाद ही है जो परिवार, समाज को कई भागों में बांटा हुआ है जो एक संकीर्ण मानसिकता का प्रतिक है। समय–समय पर हमारे देश में महान विभूतियों द्वारा ऐसी कुप्रथा को समाप्त करने का कार्य किया गया। समाज से जातिवाद जैसी बीमारी को हटाने के लिए संत कबीर, विवेकानंद जी, डॉ.अम्बेडकर जी जैसे महान समाज सुधारक द्वारा अथक प्रयास किया गया। अनेक विद्वानों ने बताया की समाज से जातिवाद जैसी बीमारी को शिक्षा जैसे औषधि से ही ठीक किया जा सकता है। किसी विद्वान् द्वारा सही ही कहा गया है कि –

जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिये ज्ञान

मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान

यह दोहा जातिवाद को झूठ साबित करती है, जिसे संत कबीर, जो एक जुलाहा थें और जाति के ठेकेदारों की नजर में दलित होता है, उनके द्वारा रची गयी थी।

वर्तमान में जातिवाद का असर कम नही है। समाज में जातिवाद के नाम पर बड़े–बड़े घोटाले हो रहे है। शिक्षा, राजनीति, स्वास्थ्य, वैवाहिक सम्बन्ध हर क्षेत्र में देखने को मिल जायेगा। जातिवाद ने समाज

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

को जर्जर कर दिया है, समाज को बांध के रखने वाली एकता की डोर टूट रही है और कब अंत हो जाये कुछ नहीं कहा जा सकता। जातिवाद, छुआछूत सनातन परंपरा नही है बल्कि विदेशी आक्रमण की देन है। अनादी काल से कभी किसी को छोटा–बड़ा नहीं माना गया। श्रीमदभागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं

गुणकर्मविभागश: ।"

अर्थात– हे अर्जुन! मेरी यह सृष्टि चार वर्णों में बटी है और इस बटवारे का आधार गुण और कर्म है जन्म नहीं।

भारत की सनातन परम्परा में तो सबरी के जूठे बेर, जिसे श्रीराम ने खाया, का वर्णन है। धरती जिसे अजीव कहते है, सुबह उठने पर धरती पर पावं रखने से पूर्व उससे क्षमां मांगते हैं।

"समुन्द्र वसने देवी, पर्वत स्तन मंडले

विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमास्वमेव"

अर्थात् – हे देवी धरती! आपने समुंद्र रूपी वस्त्र धारण की हैं, पर्वत आपका आँचल है, आप हरि विष्णु की पत्नी हैं आपको नमन है, अभिनन्दन है। हम अपने पैरो से आपको स्पर्श कर रहें हैं इसके लिए हमें क्षमा करना देवी।

हमारा अतीत ऐसा था जो सनातन परंपरा पर आधारित था जिसमे कोई छुआछूत नहीं था लेकिन कुछ आततार्इयों के आक्रमण ने जातिवाद का प्रहार किया और यह अफवाह फैला दी कि जातिवाद तो शुरू से है।

छुआछूत समाज में संक्रमण की तरह फैला था जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था। उसी दौर में भारत निर्माता, संविधान निर्माता, भारत रत्न डॉ.भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ में हुआ।

डॉ. अम्बेडकर को छुआछूत के नाम पर बहुत अत्याचार सहना पड़ा था और इसी अत्याचार को समाप्त करने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। डॉ. अम्बेडकर के प्रयास भारत में संविधान के रूप में हमें मिला।

समाज को जाति के नाम पर बांटना मानव की एक ऐसी भूल है जिसका दुष्परिणाम आज भी भुगतना पड़ रहा है। मानव ने अपने थोड़े से लाभ के लिए समाज को जिस जाति के दलदल में ढकेल दिया है वह दलदल आज और भी गहरा होता जा रहा है। जातिवाद ईश्वर की देन नही है , यह स्वार्थी मानव की देन है, जो मानव के अस्तित्व के लिए ही खतरा हो गया है। ऐसी प्रथा समाज को विकास की दिशा नही देती बल्कि समाज के विकास को अवरुद्ध करती है।

रैदास इक ही बूंद सो सब ही भयो वित्थार।

मुरखि है तो करत है वरन अवरन विचार ।

रैदास कहते हैं कि यह सृष्टि एक ही बूंद का विस्तार है अर्थात् एक ही ईश्वर से सभी प्राणियों का विकास

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

हुआ है फिर भी लोग जात–पात का विचार अर्थात् जातिवाद भेद–विचार करते हैं वे नितांत मूर्ख हैं।

भारत में एकता बनी रहे इसके लिए समय–समय पर ऐसे योद्धा, रक्षक, विद्वानों का अवतरण हुआ जिन्होंने भारत की सुरक्षा में सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। इन्ही विद्वानों में डॉ.भीमराव अम्बेडकर जी का नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। डॉ. अम्बेडकर को दलित नेता के रूप में लोग संबोधित करते है लेकिन उन्होंने बचपन से ही जाति प्रथा का खुलकर विरोध किया। वे जातिवाद से भारत को मुक्त कराने और आर्थिक रूप से मजबूत करने का सपना देखे थें लेकिन देश की स्वार्थी राजनितिक व्यवस्था ने उन्हें सर्वसमाज के नेता के बजाय दलित नेता के रूप में स्थापित कर दिया।

बाबा साहेब का मानना था कि समाज में जकड़े कुरीतियों से मुक्त होना जरुरी है जो जाति के नाम पर फैली है। महिला अधिकार, सामाजिक न्याय जैसे विषय पर डॉ. अम्बेडकर का जीवन समर्पित था । डॉ. अम्बेडकर के अथक प्रयास से ही जातिवाद में महिलाओं की स्थिति को समझने का प्रयास किया और इसके लिए उन्होंने हिन्दू कोड बिल लाने का प्रयास किया जिससे महिला सशक्तिकरण हो सके। जबकि यह बिल पास नही हुआ फिर भी वर्तमान में देखें तो भारत सरकार इस पर सकारात्मक प्रयास कर रही है।

अम्बेडकर जी का मानना था कि जातिवाद, दलित, छुआछूत जैसी कुप्रथा को दूर करने का सबसे बड़ा हथियार है अन्तर्जातीय विवाह और लड़कियों की शिक्षा पर विशेष कार्य हो।

अम्बेडकर जी का प्रसिद्ध कथन है–

"शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो जितना पिएगा वह उतना दहाड़ेगा "

अगर शिक्षा से अपने भाग्य को अपने अनुसार बदल डालने का उदाहरण देखना है हो तो अम्बेडकर जी से बड़ा उदाहरण नही है। समाज के सभी दूषित परम्पराओं के शिकार होने के बावजूद भी अम्बेडकर जी ने वह मुकाम हासिल किया जिसे आज भी पाने के लिए लोगों का जीवन समाप्त हो जाता है परन्तु मिलता नहीं है।

भारत के नागरिक होने के नाते जो अधिकार प्राप्त है, जिसमे मौलिक अधिकार और सामाजिक न्याय जैसे अधिकार दिलाने का श्रेय डॉ. अम्बेडकर जी को जाता है। वर्तमान परिस्थितियों में भी जाति प्रथा, छुआछूत जैसी कुप्रथा कम नही है और इसको तबतक दूर नहीं किया जा सकता जबतक नागरिक, शिक्षण संस्थान, विद्यार्थी, सरकार सभी मिलकर प्रयास नही करेंगे

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भारत में जातिवाद से हो रहे दुष्प्रभाव को बताना तथा समाज की गति पर हो रहे नकारात्मक असर पर प्रकाश डालना ताकि इसको दूर करके समाज में समानता, स्वतंत्रता व भाईचारे की स्थापना हो सके।

अनुसन्धान पद्धति – प्रस्तुत शोध वर्णात्मक पद्दति पर आधारित है। इस आलेख में द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है। जिसमें विभिन्न पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र, अनेक वेबसाइट का प्रयोग हुआ है।

जातिवाद पर अम्बेडकर के विचार – जातिवाद के खिलाफ डॉ. अम्बेडकर का एक लम्बा संघर्ष रहा है। अम्बेडकर बचपन से ही इस कुप्रथा के शिकार रहे हैं और अमानवीय व्यवहार का सामना किया। अम्बेडकर ने जातिवाद के दुष्प्रभाव से समाज का होता विभाजन देखा है। इसे भारत के लिए सबसे बड़ी कमजोरी के रूप में देखा और कहा कि जातिवाद से न केवल समाज का विभाजन ही होगा बल्कि व्यक्ति का विकास

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

भी अवरुद्ध हो जायेगा। जातिवाद जसी बुराई से सिर्फ व्यक्तिगत रूप से ही नही बल्कि सार्वजानिक रूप से दुस्प्रभाव भुगतना पड़ता है, महिलाओं की स्थिति और दयनीय हो जाति है। इसमें सुधार के लिए सभी संस्थाओं और संरचनाओं को बदलने की आवश्यकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था को समाप्त करने के लिए शिक्षा का प्रसार करना बेहतर उपाय बताया। उन्होंने कहा सभी लोग संगठित होकर रहो और अपनी वर्तमान और भविष्य की स्थिति को सुधार लो इसके लिए उन्होंने संवैधानिक सुधार का भी प्रयास किया। जाति आधारित भेदभाव को दूर करने के लिए संविधान को आधार बनाया। भारत के संविधान में अनुच्छेद १७ (भाग ३) के तहत जाति या किसी प्रकार के भेदभाव, अस्पृशचता जैसी स्थिति से सुरक्षा प्रदान करती है और यदि कोई व्यक्ति ऐसी कुप्रथा को प्रोत्साहन देता है तो यह दण्डनीय अपराध होगा।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जातिवाद – जाति व्यवस्था के विकास की जड़ प्राचीन काल में देखने को मिलती है। वेदों में जाति व्यवस्था का वर्णन नहीं था बल्कि वर्ण व्यवस्था का वर्णन मिलता है और वर्ण व्यवस्था भी व्यक्ति के जन्म पर नही बल्कि कर्म पर निर्भर थी। समय के साथ वर्ण व्यवस्था में परिवर्तन हुआ और जाति व्यवस्था उसका परिणाम है तथा जातियों का निर्णय जन्म करने लगी न की कर्म। शूद्रों और अछूतों को सबसे निचला स्तर का समझा जाने लगा। मनुस्मृति में जाति व्यवस्था का वर्णन जन्म के आधार पर किया गया है। वर्ण और जाति में भेद है जहाँ वर्ण चार हैं (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) वहीं जातियां कई उपजातियों में बटी होने के कारण इसमें विभिन्नता है और यह विभिन्नता सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में है। जातियों के बटवारों ने सामाजिक व्यवस्था में बहुत बदलाव कर दिया और उसके बाद जातियों के बीच आपस में विवाह, सामाजिक सम्बन्ध, भोजन सब पर कठोर नियम बनायें गए।

ब्रिटिश शासन ने जाति व्यवस्था को और हवा दी और उसका लाभ अपने पक्ष में किया, लोगों को बांटा और राज किया।

वर्तमान समय में जातिवाद ने पुरे समाज को दूषित किया है। जातिवाद का लाभ राजनीति में खूब किया जाता है जिसका परिणाम बहुत ही घातक होगा

जातिवाद का उन्मूलन – अम्बेडकर का दृष्टिकोण – डॉ. अम्बेडकर जाति व्यवस्था को समाज के दमन का साधन बताते हुए कहते थे कि यह समाज से समानता और न्याय को नष्ट कर देगी डॉ.अम्बेडकर ने कहा कि जाति व्यवस्था में सुधार की आवश्कता नही है बल्कि इसे समाप्त कर देना ही उचित है। जाति व्यवस्था से समाज में असमानता स्थायी रूप से व्याप्त रहेगी। अतरू ऐसे प्रचलन को ही समाप्त करना होगाद्य डॉ. अम्बेडकर सिर्फ जाति व्यवस्था को समाप्त करने तक ही स्वयं को सीमित नही किये बल्कि संवैधानिक और राजनितिक अधिकारों की मांग पर भी जोर दिया। उन्हें पता था कि जब तक पिछड़े व दलित लोग राजनीति व्यवस्था में सशक्त नहीं होंगे उन्हें समाज में सम्मान नहीं मिलेगा। दलित और पिछड़ो को जागरूक करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। उन्होंने कहा कि जब तक सभी दलित, पिछड़े पुरुष और स्त्री शिक्षित नहीं होंगे तब तक वे अपने हक के लिए नही लड़ सकते हैं। शिक्षा ही वह ताकत है जो अज्ञानता के अँधेरे को दूर करेगी और सभी को उसका अधिकार दिलाएगी।

अम्बेडकर तथा भारतीय संविधान – संविधान में जहाँ अनुच्छेद १५ सामाजिक न्याय की बात करता है वहीँ अनुच्छेद १७ अस्पृशता जैसी कुप्रथा पर प्रहार है। अस्पृशता के नाम पर होने वाला किसी भी प्रकार का

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

भेदभाव अपराध की श्रेणी में आता है और उसके खिलाफ भारत के संभिधन में कड़ा प्रावधान किया गया है। संविधान में पिछड़े व अछूत लोगो के लिए शिक्षा, रोजगार, राजनीति में आरक्षण देकर उन्हें समाज के मूलधारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। अगर वर्तमान समय में देखा जाये तो अम्बेडकर के विचारों का धरातल पर पूर्ण करने का अथक प्रयास भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है। भारतीय संविधान में समानता (१४–१८), स्वतंत्रता (1६ –२२), बंधुत्व का अधिकार देकर भारत के सभी नागरिकों को सम्मान देने का कार्य किया है।

अम्बेडकर के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव – अम्बेडकर के सतत प्रयास का प्रभाव भारतीय समाज पर दिखाई पड़ता है। अम्बेडकर ने जो अलख जगाई है उसे सही दिशा में ले जाने का भरपूर प्रयास भारत सरकार, शिक्षण संस्थानों द्वारा किया जा रहा है। अम्बेडकर ने ऐसी प्रथाओं व परम्पराओं का विरोध किया जो भारतीय समाज को बाँटती है। कालाराम मंदिर सत्याग्रह(१६३०) और महाद सत्याग्रह(१६२७) जैसे आन्दोलन को करने का एक ही लक्ष्य था जो इनसे वंचित है उन्हें उनका अधिकार दिलाना और समानता को बनाये रखना।

अम्बेडकर ने शिक्षा को महत्व देते हुए कहा की शिक्षा के द्वारा हर नागरिक अपना विकास कर सकता है। पाखंड और यथार्थ में अंतर बताने का कार्य शिक्षा ही कर सकता है। डॉ. अम्बेडकर ने पुरुष और स्त्री सभी को शिक्षा का समान अधिकार की वकालत की और उन्हें समाज के मुख्य धरा में जोड़ने का प्रयास किया, इसके लिए दलित व पिछड़े को आरक्षण की भी वकालत की। बाबा साहेब ने कहा अगर राजनीतिक रूप से भी पिछड़े सशक्त रहेंगे तो उन्हें समाज में वह सम्मान मिलेगा जिनके वे अधिकारी है। डॉ. अम्बेडकर ने ऐसे लोगों के लिए राजनितिक व्यवस्था में भी आरक्षण की बात की। डॉ. अम्बेडकर के जातिवाद के उन्मूलन का अनुशरण कर भारत सरकार द्वारा निम्न योजनायें चलाई जा रहीं है –

- विद्यालय में मुफ्त शिक्षा व मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था।
- पिछड़े व दलित घर के छात्र–छात्राओं के लिए सहायता शुल्क की व्यवस्था।
- सरकारी अस्पताल में मुफ्त इलाज।
- उच्च शिक्षा में पिछड़े व दलित विद्यार्थियों को आरक्षण की व्यवस्था।
- बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना।
- दीनदयाल विकलांक पुनर्वास योजना।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरीध्ग्रामीण)।
- स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण।
- इंदिरा प्रिय्दर्शनीय योजना।
- प्रधानमंत्री रोजगार योजना।

निष्कर्ष – जातिवाद आज की देंन नही है यह कई पीढ़ियों से चली आ रही ऐसी कुप्रथा है जिसे हमारे पूर्वज झेल रहे है। इस कुप्रथा को समाप्त करना होगा अन्यथा यह मानव के अस्तित्व के लिए खतरा है , मानव की वास्तविक पहचान में बाधा है। जातिवाद को समाप्त करने में जिन विद्वानों में अग्रणीय रहे उनमे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी है।

जाति की व्यवस्था को समाज की सबसे बड़ी बुराई मानने वाले डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार प्रगतिशील और यथार्थता पर आधारित थे। यह सत्य है कि जिस समाज में भेदभाव, असमानता, अशिक्षा, कुप्रथा रहेगी वह समाज उन्नति का सूर्य कभी नहीं देख सकता। डॉ. अम्बेडकर का जीवन भारत से ऐसी बुराइयों को समाप्त करने के लिए समर्पित रहा और उन्होंने अपने जीवन काल तक तक भारत से सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक समस्यायों को दूर करने का सतत प्रयास किया। उनका प्रयास ही है जो आज विकसित भारत का स्वप्न देख रहा हर भारतीय कहता है कि समाज की हर कुरीतियों को झेलता हुआ व्यक्ति हमें वह शिक्षा दे गया जिसकी कल्पना करना एक दूरदर्शी और वैज्ञानिक सोच का प्रतिक है।

भारत देश व इसके नागरिक धन्य है जो ऐसे वीर को जन्म दिया और भारतवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

- अछूत कौन और कैसे ?
- जाति का संहार।
- वीसा की प्रतीक्षा।
- राज्य और अल्पसंख्यक।
- बौद्ध धम्म और साम्यवाद।
- भारत में जातियां।
- मूकनायक।
- डॉ. अम्बेडकर के ऐतिहासिक व्याख्यान।
- अछूतों की विमुक्ति और गांधीजी, लखनऊ, १९८३।
- राजू राज, बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स, मेरठ, २०१३।
- "दि नेशनल पॉलिसी फॉर दी इम्पावरमेंट ऑफ वुमेन " , २००१ "।
- कुबेर डब्ल्यू एन, आधुनिक भारत के निर्माता डॉ.अम्बेडकर दिल्ली, १९९६।
- ब्रजकिशोर शर्मा भारत का संविधान–एक परिचय, प्रेन्टिस हाल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, २००५।
- DALTON, Dennis, The Gandhian View of Caste and Caste after Gandhi, London, Oxford University Press 1967 .
- Ghuryes, G.S., Caste and Class in India, Populer Book Depot, Bombay, 1961.
- Bhatia. K.L., Dr. B.R. Ambedkar: Social Justice and the Indian Constitution, Deep and Deep, New Delhi, 1994.
- Ahir, D.C., The Legacy of Dr. Ambedkar (Bharat Ratna), B.R. Publications, New Delhi, 1990.
- Busi, S.N., Mahatma Gandhi and Baba Saheb Ambedkar, Crusaders against Caste and Untouchable, Saroja Publication, Hyderabad, 1997.